डा0 ऋचा सिंह
एसोसिएट प्रो0
हिन्दी विभाग
हरिश्चन्द्र स्ना0 महा0 वाराणसी

नदी के द्वीप

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्त्रोतस्विनि बह जाए।
वह हमें आकार देती हैं।
हमारे कोण, गलिया, अन्तरीप, उभार, सैकत–कूल,
सब गोलाइयॉ उसकी गढ़ी हैं।
मॉ है वह, इसी से हम बने हैं।
किन्तु हम है द्वीप हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्त्रोतस्विनि के
किन्तु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे हि नहीं।
पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। बह जायेंगे।

और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते ?
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनायेंगे।

प्रस्तुत पंक्तियों में कठिन शब्द

स्त्रोतस्विनि – नदी की धारा
अंतरीप – भीतरी रुपाकार
सैकत–कूल – रेतिले किनारे
प्लवन – बाढ़

- हम नदी के द्वीप में – रूपक अलंकार
- संस्कृति के साथ व्यक्ति या समाज के सम्बन्ध को क्रमशः नदी और द्वीप के रूपक से दर्शाया गया हैं।

द्वीप हैं हम। यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड में।
वह बृहद भूखण्ड से हम को मिलाती है।
और वह भूखण्ड अपना पितर है।

नदी तुम बहती चलो।
भूखण्ड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा हैं,
माँजती, संस्कार देती चलो/यदि ऐसा कभी हो –
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से, अतिचार से,
तुम बढ़ो,प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे–
यह स्त्रोतस्विनि, ही कर्मनाशा,कीर्तिनाशा घोर काल–प्रवाहिनी बन जाए–
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर से खड़ा होगा नये व्यक्तित्व का आकार।
मातः, उसे फिर संस्कार तुम देना।

कठिन शब्द

दाय – दायित्व

आह्लाद – आनन्द

स्वैराचार – स्वेच्छाचार

अतिचार – अति की भावना से उत्पीड़न

प्लावन – तूफान, प्रलय